औषधीय और सुंगधित पौधे

भारत को बहुमूल्य औषधीय और सुंगधित पौधों मसालों का खजाना समझा जाता है । पर्यावरण और वन मंत्रालय ने औषध निर्माण उद्योग में उनकी महत्ता को समझते हुए 9500 से भी अधिक पादप प्रजातियों की पहचान की है और उन्हें प्रलेखित किया है । स्वास्थ्य की देख रेख में प्रकृति की ओर वापसी के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह संगत है कि इन बहुमूल्य पादप प्रजातियों का न केवल परिरक्षण किया जाए, अपितु उनकी खेती का भी विकास किया जाए ताकि घरेलू उद्योगों की मांग को पूरा किया जा सके तथा निर्यात की उज्ज्वल संभावना का भी दोहन किया जा सके । संग्रहण से औषधीय और सुंगधित पौधों की खेती और की जाना पॉलिहर्बल सहित जड़ी बूटी संबंधी औषधों के लिए अपेक्षित कच्चे माल की शुद्धता, प्रमाणिकता और सतत् आपूर्ति सुनिश्चित करेगा । पादप के इन समूहों से हमारे विदेशी मुद्रा अर्जन की क्षमता प्रति वर्ष 3,000 मिलियन अमेरिकी डालर होने की संभावना है । राज्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा बहुत से औषधीय पौधों के लिए कृषि तकनीकी विकसित किया गया है । असंगठित विपणन प्रबंधों के कारण इस क्षेत्र ने पूर्ण क्षमता का दोहन नहीं किया है । सभी मामलों को पता लगाने के लिए भारतीय चिकित्सा पद्धति और होम्योपैथी प्रणाली विभाग में एक औषधीय पादप बोर्ड का गठन किया गया है ।

बागानी फसलें

नारियल

नारियल पाम की "कल्प वृक्ष" के रूप में प्रशंसा की गई है । यह मानव के लिए प्रकृति का बहुमूल्य वरदान है । यह उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में लाखों लोगों के लिए भोजन और पेय पदार्थ के वास्तविक स्रोत के रूप में काम आता है । यह फसल मुख्यतया देश के सभी तटवर्ती भागों और कुछ हद तक

आंतरिक भागों तथा साथ ही पूर्वोत्तर क्षेत्रों में उगाई जाती है । भारत में महत्वपूर्ण नारियल राज्य केरल तमिल नाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र, गोवा, असम, पांडिचेरी, लक्षद्वीप, अंदमान और निकोबार द्वीप समूह हैं । गुजरात, मध्य प्रदेश, बिहार और पूर्वोत्तर राज्यों ने भी नारियल की खेती में गति हासिल की है । यह फसल रोजगार और आय सृजन में अपने विशाल अवसरों से राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था में पर्याप्त योगदान दिया है । नारियल की खेती में अधिक योगदान छोटे और सीमांत किसानों का है । लगभग 10 मिलियन लोग नारियल की खेती प्रसंस्करण और संबंधित कार्यकलापों पर आश्रित हैं।

काजू

विश्व के परिदृश्य में काजू में लगभग 43% का योगदान देने के कारण भारत का प्रमुख स्थान है । भारत काजू का बड़ा उत्पादक और निर्यातक होने के बावजूद देश में कच्चे काजू का उत्पादन प्रसंस्करण क्षेत्र की आवश्यकता से बहुत कम है । वर्ष 1999-2000 के दौरान 6.86 लाख हैक्टे० क्षेत्र से प्राप्त कच्चे काजू का उत्पादन 5.2 लाख मी० टन था । यह उत्पादन देश में लगभग 825 काजू प्रसंस्करण एककों की मांग के 50% को पूरा करने में मुश्किल से पर्याप्त है ।

उद्योग को कच्चे काजू की मांग लगभग एक मिलियन मी० टन है ।

काजू का राज्य-वार क्षेत्र व उत्पादन

क्षे-क्षेत्र हे० में, उ०-उत्पादन मी० टन में

राज्य	1992-93		9993-94		1994-95		1995-96		1996-97		1997-98		1998-99		1999-2000	
	क्षे०	उ०	क्षे०	उ०	क्षे०	उ०	क्षे०	उ०	क्षे०	उ०	क्षे०	उ०	क्षे०	उ०	क्षे०	उ०
आंध्र प्रदेश																
गोवा																
कर्नाटक																
केरल																
महाराष्ट्र																
उड़ीसा																
तमिलनाडु																
पश्चिम बंगाल																
अन्य																
कुल																

काजू के उत्पान व व्यापार के विश्व परिदृश्य के बारे में ब्यौरे के लिये <u>यहां क्लिक करें</u> ।

कोको

भारत में कोको की खेती के अधीन लगभग 14000 हे० क्षेत्र है (तालिका-11) । अस्सी के दशक में मूल्यों में आई अचानक भारी कमी के कारण, क्षेत्र में कमी हुई है । वर्ष 1999-2000 में, 5200 मी० टन कोको का उत्पादन हुआ था । केरल में इसका बड़ी मात्रा में उत्पादन होता है । कोको का उपयोग मुख्य रूप से मिष्ठान वस्तुओं के रूप में किया जाता है । कोको से होने वाली वार्षिक निर्यात आय 9 करोड़ रूपये तक है । 29 लाख मी० टन के विश्वव्यापी उत्पादन की तुलना में भारतीय उत्पादन सार्थक नहीं है । उत्पादन और आवश्यकता के बीच के अंतर को पूरा करने के लिए गहन उत्पादन कार्यक्रम शुरू किए जाने की जरूरत है ।

कोको का क्षेत्र व उत्पादन

क्षेत्र हे० में, उत्पादन मी० टन में

राज्य	1996-97		1997-98		1998-99		1999-2000	
	क्षेत्र	उत्पादन	क्षेत्र	उत्पादन	क्षेत्र	उत्पादन	क्षेत्र	उत्पादन
आंध्र प्रदेश	1208	720	670	150	670	150	1.4	0.6
कर्नाटक	2773	1397	2800	1300	2780	1325	2.8	1.3
केरल	8364	3537	8525	3794	8909	3686	8.9	3.7
तमिलनाडु	49	43	43	37	43	37	0.0	0.0
कुल	**12394**	**5697**	**12038**	**5281**	**12402**	**5198**	**13.1**	**5.6**